



प्यारे किसान, भाइयो—बहनों स्वराज साथियों, संगठन के पदाधिकारियों व प्यारे बच्चों जय गुरु!! दिपावली की आपको हार्दिक शुभकामनाएं मेरिया का यह पर्व हमारे लिए बहुत सारी खुशियां लेकर के आए 12 महीने हमारे खेत खलियान धन धान्य से भरे रहें। हमारा अनाज धन धान्य भरा हुआ रहे और धन धान्य से हमारे भण्डार पड़े रहे।

चूँकि दिपावली केवल मात्र आपका हमारा ही नहीं बल्कि

प्रकृति, मवेशी, हमारे प्राकृतिक संसाधनों का भी उत्सव है तथा दीपावली के बाद से हमारी आने वाली फसल की तैयारी भी शुरू हो जाती है। त्योहार के साथ में नई ऊर्जा भी लेकर के आए और हमारी बितें समय की तकलीफें दूर हो। यह हमारी हमेशा इच्छा होती है हर इंसान की इच्छा होती की दिपावली से कुछ गत वर्ष कमिया तकलीफ रह गई हो तो आने वाले वर्ष में सुधरे परन्तु उसके लिए हमें हमारी ओर से तैयारी भी साथ में करनी होती है। चाहे वह हमारे खाद से जुड़ा मामला हो, मिट्टी से जुड़ा मामला हो, पेड़—पौधों से जुड़ा हुआ हो, मवेशियों से हो, हमारे खुद के नए कपड़े हो, मवेशियों के लिए रंग और रामसी या हमारे घर की लिपाई—पोताई हो, सभी विषयों में हम उस उल्लास को देखते है।

साथ में एक आग्रह करना चाहता हूँ की अक्टूबर माह हमारे सर्दी की खेती या रबी की खेती का समय शुरूआत करने वाला है चूँकि हम दिपावली के बाद में जाकर तैयारियां शुरू करते हैं क्यों ना हम दिवाली के साथ ही हमारी तैयारी शुरू करें हमारे चौथ के लड़ड़ू के साथ ही हम हमारे बीजों का संरक्षण व जो फसल करनी है उसके लिए तैयारी करें और केवल मात्र हमारे लिए सामूहिक खेती या मिश्रित खेती या हांगंडी खेती वर्षा ऋतु की ना मान करके ठंठ की खेती भी हो सकती है जिसमे दलहन, तिलहन, खाद्यान्न, सब्जियां और तो और मैंने कई क्षेत्रों में सर्दियों में पेड़—पौधे लगाते हुए भी देखा है जो कि हमारे आने वाले समय में मजबूती से अगली बरसात में ज्यादा मजबूती से खड़े हो सकते है, परन्तु किसान समझे की ठंठ कम पड़ने वाली हो उस दौरान जब जनवरी के अन्तिम सप्ताह में या फरवरी के प्रारंभ में उस पौधे को लगाते है ताकि वह दो—तीन महीनो में मजबूत हो जाते हैं और अगली बरसात में गति मिलती है। जिन साथियों के बरसात में पौधे लगाने रह गए हैं वह भी इसमें पौधे लगा सकते हैं तथा बीज संभालना यही हमारी पहचान है, हम दिवाली पर उसकी पूजा तो करते है क्यों ना हम उस पूजा को इस तरीके से करें कि हम हमारी अगली फसल में काम में ले आपस में उसका आदान—प्रदान करें। हम दिपावली के जो उपहार देते है उसमे हम हमारे प्रकृति के उपहार को उसमें सम्मिलित करे यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

जैसा की हमने गत माह में भी आपसे चर्चा में कहा था चूँकि हमारे आंचल में, हमारे क्षेत्र में अलग—अलग प्रकार की नशीली दवाइयां या नशे का सेवन बढ़ता जा रहा है। इस त्योहार से इस बात को आप पुनः ध्यान में रखे कि हम इस नशे की आदत से दूर हो, हमारे युवा, भाइयों और बहनों व बच्चों को, नशे से दूर करने का संकल्प दिलाए, ताकि हमारी पीढ़िया सुरक्षित रह सके और जैसा कि मैं कहता हूँ इन्सान ही नशे से नहीं, हमने तो हमारे खेतों और मिट्टी को भी नशे से जकड़ना शुरू कर दिया है और उन रसायनिक दवाइयो से भी हम हमारे फसले, मिट्टी, और पानी, को मुक्त करे। इसी शुभकामनाओं के साथ दीपावली की पुनः शुभकामनाएं आज दीवाली, काल दीवाली, पमणे दाड़े मेरियु।

जय स्वराज

आपका अपना
जयेश जोशी



खरीफ फसलों की कटाई और भण्डारण की टिकाऊ पद्धतियाँ

हमारे आदिवासी क्षेत्र की आदिवासी जीवनशैली पूरी तरह खेती पर आधारित है। यहाँ खरीफ का मौसम केवल खेती का मौसम नहीं बल्कि जीवन, उम्मीद और उत्सव का समय माना जाता है। बरसात की पहली बूंद के साथ ही किसान बेल और हल लेकर खेतों में उतरते हैं, बीज बोते हैं और हर गाँव हरियाली से भर उठता है।

स्थानीय बुजुर्ग किसान अक्सर कहते हैं—

सावण में बोए कार्तिक में खाए — यानी सही समय पर बोई गई खरीफ की फसल कार्तिक मास तक कटकर घर आ जाती है। एक ओर कहावत है — **“जितनी मेहनत खेत में, उतनी समझ भंडार में”** — जो इस बात की ओर इशारा करती है कि केवल फसल उगाना ही काफी नहीं है, बल्कि उसे सही ढंग से काटना और सुरक्षित भंडारित करना भी उतना ही जरूरी है।

खरीफ की फसलें जैसे मक्का, धान, रागी, काँग, कोदरा, हामली, तुआर, उड़द,मूंग, तिल, मूँगफली और अम्बाड़ी यहाँ के आदिवासी परिवारों व उनके पशुओं का पेट भरती हैं — यानी भोजन और पशुओं के चारे का मुख्य साधन इन्हीं फसलों से मिलता है। मक्के की रोटी, उड़द — मूंग की दाल और मूँगफली का तेल — ये सब घर के भोजन का हिस्सा हैं। कटाई का समय आदिवासी समाज के लिए त्योहार जैसा माहौल लेकर आता है। खेतों में सुनहरी फसल लहराती है, महिलाएँ और पुरुष हंसिया लेकर सामूहिक श्रमदान — **(हलमा)** से खेत काटते हैं, बच्चे खुश होकर दाने बीनते हैं। इस समय गाँवों में गीत और कहावतें भी गूँजती हैं—

“धान कटे सोने जैसा, मक्का कटे मोती जैसा।”

लेकिन इस खुशी के साथ बड़ी चुनौती भी जुड़ी होती है — **मेहनत से उगाई गई फसल को सालभर के लिए कैसे सुरक्षित रखा जाए?**

- यदि कटाई देर से हो गई तो दाने खेत में गिरकर नष्ट हो जाते हैं।
- अगर सुखाने में कमी रह गई तो नमी से फफूंद लग जाती है।
- अगर भंडारण सुरक्षित नहीं हुआ तो चूहे और कीट पुरा अनाज बर्बाद कर देते हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर भी यह आँकड़ा है कि भारत में कटाई के बाद करीब 6—10 प्रतिशत अनाज बर्बाद हो जाता है, और आदिवासी क्षेत्रों में यह प्रतिशत और भी अधिक है। इसका सीधा असर किसानों की रसोई और जेब दोनों पर पड़ता है। इसलिए जरूरी है कि किसान पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक तकनीक का मेल अपनाएँ।

(1) सही समय पर कटाई (2) उचित मड़ाई (3) अच्छी तरह सुखाना (4) सुरक्षित भंडारण

ये चार कदम किसान की मेहनत को बर्बाद होने से बचाते हैं और आने वाले समय के लिए परिवार की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

इस पत्रिका के माध्यम से हम इन्हीं चरणों को विस्तार से समझेंगे और यह भी देखेंगे कि किस प्रकार आदिवासी किसान अपनी परंपरागत समझ और नई तकनीकों को मिलाकर “मेहनत की फसल, सुरक्षित भविष्य” बना सकते हैं।

अगर इन कामों में लापरवाही हो जाए तो :

- दाने झड़कर खेत में ही गिर सकते हैं।
- नमी से फफूंद लग सकता है।
- कीट और चूहे अनाज खराब कर सकते हैं।
- बाजार में अनाज की गुणवत्ता घटने से सही दाम नहीं मिलते।

इसलिए कटाई से लेकर भंडारण तक की सभी प्रक्रियाओं का सही और वैज्ञानिक ढंग से पालन करना जरूरी है।

कटाई की सही पद्धतियाँ

फसल	कटाई का सही समय	विशेष सावधानी
मक्का	दाने कठोर हो जाएं, दाने पर नाखून नहीं धंसे, छिलका भूरा हो।	जल्दी काटने पर दाने सिकुड़ जाते हैं।
धान	80—85 % बालियाँ सुनहरी हों व झुकने लगे।	देर से काटने पर दाने झड़ जाते हैं।
उड़द / मूंग	70—80 % फलियाँ काली / भूरी हो जाएं।	देर से काटने पर फलियाँ फट जाती हैं।
तिल	पत्तियाँ गिर जाएं, फलियाँ भूरे रंग की हो जाएं।	अधिक नमी पर काटने से दाने फफूंदग्रस्त हो सकते हैं।
मूँगफली	पत्तियाँ पीली पड़ जाए व किसी एक पौधे को उखाड़कर देखे की उसकी भूमिगत फली के अंदरूनी भाग गहरा भूरा हो चुका हो।	अधिक नमी या अपरिपक्व पौधों को उखाड़ने पर फलियों में फफूंद लग जाती है।

कटाई के तरीके

- पारंपरिक तरीका : समतल या दाँतेदार हंसिया से हाथ से कटाई।
- सामुदायिक श्रमदान : गाँव में मिलकर एक साथ खेत काटने की परंपरा (हलमा)

2. मड़ाई (थ्रेशिंग) और सफाई

कटाई के बाद फसल को 2—3 दिन धूप में सुखाकर मड़ाई करनी चाहिए।

● पारंपरिक मड़ाई

- 1) मक्का : भुट्टों को हाथ से तोड़कर डंडों से पीटकर या लकड़ी/लोहे की जाली पर रगड़कर दाने अलग किए जाते हैं।
- 2) धान / दलहन : पौधों को बैलों से रौंदकर या लकड़ी के फर्श पर पीटकर मड़ाई।

● उन्नत मड़ाई

पैडल या पावर थ्रेशर से मड़ाई करने पर दाने नहीं टूटते, समय बचता है और नुकसान कम होता है।

● सफाई

- 1) सुपा (बांस की छलनी) या हाथ से झालनी चलाकर भूसा अलग करें।
- 2) हवा में उछालकर (विनोइंग) हल्की अशुद्धियाँ उड़ाई जाती हैं।

3. सुखाना और नमी प्रबंधन

भंडारण से पहले अनाज का अच्छी तरह सुखाना सबसे महत्वपूर्ण है।

- साफ तिरपाल या कंक्रीट के फर्श पर अनाज फैलाएं।

- हर 2—3 घंटे में अनाज को उलट—पलट करें।
- रात में अनाज को ढक दें ताकि ओस न गिरे।

- मक्का के दाने को सुखाने से पहले भुटे से अलग करें।

नमी मापने के लिए छोटे डिजिटल नमी मीटर का उपयोग करें, जो अब कृषि विज्ञान केंद्रों पर उपलब्ध हैं।

4. भंडारण के पारंपरिक तरीके

- कोठी / भरोला : मिट्टी या बांस से बना पात्र, गोबर—मिट्टी से लीपा जाता है।
- मटका भंडारण : मिट्टी के घड़े जिनको मिट्टी से सील कर दिया जाता है।
- सामुदायिक भंडार : गाँव में अनाज का साझा भंडार बनाना, जरूरतमंद परिवार इसमें से उधार ले सकते हैं।
- कबला : बांस या साठी का बना होता है जिसे बाहर से गोबर से लिप दिया जाता है जिसमें लगभग 2—3 किंवटल अनाज भंडारित किया जा सकता है।
- फल सहित संरक्षित : भिन्डी, मक्का, प्याज, लहसून इत्यादि को साबुत छिलके सहित भंडारित कर दिया जाता है।
- तोम्बडी : तोम्बी (लौकी का प्रकार) में से गिरी निकालकर साफ करके उसमें बीजों को भंडारित कर दिया जाता है।

5. आधुनिक और सुधारित भंडारण तरीके

- धातु के ड्रम : वायुरोधी और चूहों से सुरक्षित।
- पुसा बिन : कम लागत वाला वैज्ञानिक भंडारण ढाँचा।

6. कीट और चूहा नियंत्रण

- भंडार को भरने से पहले धोकर धूप में सुखाएं।
- चूहे भगाने के लिए बिल बंद करें और लोहे की जाली लगाएँ।
- अनाज में नीम की गिरी का पाउडर, राख या सरसों का तेल 5—7 मि.ली./किग्रा. मिलाएँ।
- समय—समय पर भंडार खोलकर जांच करते रहें।

7. महिलाओं और समुदाय की भूमिका

- महिलाएँ कटाई, दाने निकालने, सुखाने और भंडारण की सबसे बड़ी जिम्मेदारी निभाती हैं। अगर उन्हें सही प्रशिक्षण और उपकरण मिलें तो घर का अनाज लंबे समय तक सुरक्षित रह सकता है।
- सामूहिक सुखाने का आँगन : गाँव में साझा सुखाने की जगह बनाने से अनाज गंदा नहीं होता।
- साझा थ्रेशर और क्लीनर : श्रम और समय दोनों बचते हैं।

8. भंडारित अनाज में लगाने वाले प्रमुख कीट व उसका नियंत्रण

- विश्व में लगभग 1000 कीट भंडारित अनाज से जुड़े पाए जाते हैं।
- भारत में इनमें से 12 प्रमुख प्रजातियाँ अधिक हानि पहुँचाती हैं।
- कुल लगभग 10 प्रतिशत अनाज भंडारण के दौरान कीट, चूहे, पक्षी, नमी आदि से नष्ट होता है।
- मुख्य हानि केवल खाए गए दाने से नहीं बल्कि गंदगी व दूषण से भी होती है।

प्रमुख भंडारण कीट

भंडारण कीट प्रबंधन

- अनाज को अच्छी तरह सुखाकर (< 10 % नमी)

रखना।

- नए व कीट मुक्त बोरे इस्तेमाल करना।

- गोदाम को चूहे / नमी

से सुरक्षित वसफेद चूना

किया हुआ रखना।

- भंडारण से पहले दरारें

बंद करना और नीम की

पत्तियाँ या राख से

उपचार।

- गोदाम में वेंटिलेशन,

एरिएशन व बैगों की

उचित दूरी।

- 8. निष्कर्ष और सुझाव

कटाई के बाद की प्रक्रियाएँ उत्पादन जितनी ही महत्वपूर्ण हैं। अगर किसान पारंपरिक अनुभव के साथ वैज्ञानिक तकनीक अपनाएँ तो—

- 10—15% तक नुकसान घटाया जा सकता है।
- अनाज की गुणवत्ता बनी रहती है।
- बाजार में बेहतर दाम मिलता है।
- परिवार को सालभर सुरक्षित भोजन मिलता है।



वनोपज से अपनी आजीविका को दें स्थायित्व व मजबूती

वनोपज एक अमूल्य संसाधन है जो आपकी आजीविका को सुरक्षित और स्थिर करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। आदिवासी क्षेत्रों में, वनों का संरक्षण और संवर्धन न केवल पर्यावरण के लिए, बल्कि भोजन और दैनिक जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए भी आवश्यक है। हमारे पूर्वजों का मानना था कि वन की कोई भी वस्तु अनुपयोगी नहीं होती। दुर्भाग्य से, समय के साथ, हम इस ज्ञान को भूल गए और केवल उगाई जाने वाली फसलों पर ही ध्यान केंद्रित करने लगे।

प्रकृति के मूल्य को पहचानें :

विभिन्न क्षेत्रों के साथियों के साथ निरंतर प्रयासों और चर्चाओं से यह स्पष्ट हुआ है कि बहुमूल्य औषधीय और सामान्य वनस्पतियों का बाजार में अच्छा मूल्य है। प्रकृति में कुछ भी व्यर्थ नहीं है। इसमें शामिल हैं :—

- 1) पुवाड़िये के बीज
- 2) महुआ के फूल / बीज
- 3) नीम की निबोली
- 4) जामुन के कंठे (बीज)
- 5) आजीजड़ा
- 6) हमाटा घास

ये कुछ उदाहरण हैं, जिनकी बिक्री से आप अपनी आय बढ़ा सकते हैं।

बाजार की जानकारी व सामुदायिक प्रयास :—
हमारा प्रयास है कि संगठन के माध्यम से हर व्यक्ति को नीमच मंडी जैसे बाजारों में इन वनोपजों के अनुमानित भाव की मासिक जानकारी मिलती रहे। अपने आंगन के नीम के फल हों, आम की गुठलियां हों, या खेतों के खरपतवार के बीज; इनकी बिक्री से प्राप्त आय तेल, बच्चों की किताबें, दवाइयों और अन्य महत्वपूर्ण पारिवारिक खर्चों को वहन करने में सहायक हो सकती है। आवश्यकता केवल इन उत्पादों के समुचित प्रबंधन, संरक्षण और बाजार में उपलब्धता सुनिश्चित करने की है।

इस पत्रिका के माध्यम से हम कोई व्यापार शुरू करने की बात नहीं कर रहे हैं, परंतु हमारा आग्रह है कि :—

1. प्रस्तुत अनुमानित भाव की जाँच करें।
2. अपने स्थानीय व्यापारी से नीमच मंडी के भावों के आधार पर उचित मूल्य पर बेचने के लिए बात करें।

यदि स्थानीय स्तर पर व्यापारी खरीद नहीं करते हैं, तो हम

सामूहिक रूप से बाजार में बेचने का प्रयास भी कर सकते हैं। हालांकि, यह पहली पहल हर परिवार, हर गांव, हर संगठन, हर पदाधिकारी और हमारे स्वराज स्वयं सेवकों को करनी होगी। प्रकृति द्वारा दिए गए जंगली पौधों, औषधियों, फलों, फूलों, पत्तों और जड़ों के सही मूल्य को पहचान कर, हम न केवल सही भाव सुनिश्चित कर पाएंगे, बल्कि संरक्षण के प्रयासों को भी मजबूत कर पाएंगे, जो अंततः प्रकृति का संरक्षण भी है।

नीमच मंडी में विभिन्न वनोपज के भाव दिए गए हैं :

नीमच मंडी—वनोपज के भाव (प्रति किंवटल—न्यूनतम से अधिकतम) :

- 1) धनिया : ₹. 3,500 से ₹. 4,500
- 2) उड़द : ₹. 2,700 से ₹. 3,000
- 3) मसूर : ₹. 3,000 से ₹. 3,500
- 4) अलसी : ₹. 3,700 से ₹. 4,000
- 5) रावा : ₹. 3,400 से ₹. 3,600
- 6) मेथी : ₹. 3,200 से ₹. 6,450

- 7) अजवाइन : ₹. 5,000 से ₹. 8,800
- 8) तिल्ली : ₹. 4,000 से ₹. 5,700
- 9) तुलसी : ₹. 6,500 से ₹. 13,301
- 10) प्याज : ₹. 350 से ₹. 1071

प्रमुख वनोपजों के भाव :—

- सोयाबीन : ₹. 4003 प्रति किंवटल (औसत भाव)
- गेहूँ : ₹. 2625 प्रति किंवटल (औसत भाव)
- लहसुन : ₹. 3800 प्रति किंवटल (औसत भाव)
- पोस्ता दाना : ₹.100000 से ₹.142000 प्रति किंवटल (अधिकतम)
- कलौंजी : ₹. 21300 से ₹. 22850 प्रति किंवटल (अधिकतम)
- चना (साबुत) : ₹. 5551 से ₹. 5811 प्रति किंवटल (न्यूनतम से अधिकतम)

ध्यान दें : ये भाव अनुमानित हैं और मंडी में फसल की गुणवत्ता और मांग के अनुसार बदल सकते हैं। किसी भी लेन—देन से पहले मंडी में वर्तमान भाव की पुष्टि करना आवश्यक है।



पर्यावरण अनुकूल ग्राम पंचायत विकास योजना निर्माण पर संवाद : स्वराज समागम का आयोजन

ग्रामीण विकास में आज केवल भौतिक संरचनाओं का निर्माण ही पर्याप्त नहीं है। स्थायी और टिकाऊ विकास तभी संभव है जब ग्राम स्तर पर पर्यावरण के अनुकूल योजनाओं को प्राथमिकता दी जाए और इसके लिए समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, माहि् मध्य प्रदेश इकाई में “स्वराज समागम” का आयोजन किया गया। यह समागम पर्यावरण अनुकूल ग्राम पंचायत विकास योजना निर्माण पर संवाद के लिए आयोजित किया गया था। इसमें रतलाम जिले के बाजना, सैलाना तथा झाबुआ जिले के थांदला और पेटलावद ब्लॉकों के ग्रामीणों ने सक्रिय भागीदारी की। इस स्वराज समागम में ग्राम पंचायत स्तर पर पर्यावरण अनुकूल विकास योजनाओं पर संवाद और विचार–विमर्श किया गया।

स्वराज समागम के उद्देश्य :

- ग्राम पंचायत विकास योजना निर्माण पर संवाद के माध्यम से ग्रामसभा में GPDP निर्माण में जन भागीदारी सुनिश्चित करना।
- ग्राम पंचायत विकास योजना में पर्यावरण अनुकूल पहल और स्थायी विकास को शामिल करना।
- जल, जंगल, जमीन, पशु, ऊर्जा और जैविक संसाधनों के संरक्षण के लिए स्थानीय विषयों को प्राथमिकता के साथ स्थान देना।
- समुदाय में जागरूकता बढ़ाना की पर्यावरण संरक्षण व विकास एक – दूसरे के सहयोगी हैं।

ग्राम पंचायत विकास योजना का उद्देश्य गाँव के समग्र विकास को सुनिश्चित करना है। परंतु आज के समय में विकास का अर्थ केवल सड़क, स्कूल या भवन निर्माण तक सीमित नहीं रह गया है। विकास तभी स्थायी और प्रभावशाली होता है जब वह पर्यावरण के अनुकूल हो। इसका महत्व और भी बढ़ जाता है जब यह आदिवासी विशेष क्षेत्र की हो, क्योंकि आदिवासी समुदाय प्रकृति का एक सच्चा संरक्षक है। इसलिए इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा, जैव विविधता का संरक्षण, और जल व भूमि की गुणवत्ता बनाए रखना आवश्यक है। इस संदर्भ में पर्यावरण अनुकूल ग्राम पंचायत विकास योजना की आवश्यकता व महत्व दोनों ही बढ़ जाते हैं। इस संवाद के माध्यम से कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन ने समुदाय, जनप्रतिनिधि और पंचायत राज के अधिकारियों के साथ विचार–विमर्श किया कि किस प्रकार जनभागीदारी और शासन के प्रयास से पर्यावरण अनुकूल ग्राम विकास योजना तैयार की जा सकती है और किन विषयों को प्राथमिकता के आधार पर शामिल किया जाना चाहिए ताकि गाँव का सतत और टिकाऊ विकास सुनिश्चित हो सके।

मुख्य विषय जिन पर संवाद हुआ :

- जल संरक्षण और जल प्रबंधन : गाँव में वर्षा जल संचयन, तालाबों और कुओं की मरम्मत, नदियों और जल स्रोतों की सफाई।
- जैव विविधता का संरक्षण : पारंपरिक और स्थानीय पौधों, बीजों और स्थानीय पशु प्रजातियों का संरक्षण।
- मुदा संरक्षण : मेड बंदी, पोधारोपण, तालाब से मिट्टी निकासी रोकना, प्राकृतिक खाद और मिट्टी परीक्षण।
- ऊर्जा संरक्षण : सौर ऊर्जा, बायोगैस, ऊर्जा बचत उपकरणों का उपयोग।
- शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण : सुनिश्चित करने के लिए समुदाय में जनभागीदारी।

इस संवाद के दौरान जन प्रतिनिधियों व शासकीय अधिकारियों ने 2 अक्टूबर से शुरू हो रही विशेष ग्राम सभा और GPDP से संबंधित विषयों पर समुदाय को जानकारी दी और ग्राम सभा में सक्रिय सहभागिता करने के लिए आमंत्रित किया।



त्यौहारों की मिठास, परंपरा का स्वाद, नवरात्रि, दशहरा व दिपावली में स्थानीय व्यंजनों से स्वास्थ्य व पोषण की खुशहाली

हमारी समाज की आत्मा उसकी संस्कृति और परंपराओं में बसती है। यहां त्योहार केवल धार्मिक आस्था या आनंद का माध्यम नहीं होते, बल्कि सामाजिक एकता, पारिवारिक जुड़ाव और सामुदायिक जीवन को मजबूती देने वाले अवसर होते हैं। खासकर आदिवासी समुदायों में त्योहार जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। त्योहारों के अवसर पर बनने वाले व्यंजन केवल स्वाद और तुप्ति का साधन नहीं होते, बल्कि पोषण और स्वास्थ्य संवर्धन के भी वाहक होते हैं। आदिवासी बहुल क्षेत्रों में नवरात्रि, दशहरा और दिवाली विशेष उल्लास के साथ मनाए जाते हैं। इन अवसरों पर परिवार और समुदाय मिलकर परंपरागत भोजन बनाते हैं, जिनमें मोटे अनाज के लड्डू, लापसी, और तिल–गुड़ जैसे व्यंजन प्रमुख हैं। ये व्यंजन न केवल संस्कृति को जीवित रखते हैं, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत लाभकारी हैं।

आदिवासी जीवन में त्योहारों की भूमिका

आदिवासी समाज में त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं होते, बल्कि यह कृषि, ऋतु परिवर्तन और सामुदायिक मेलजोल से जुड़े होते हैं।

- खेती और त्योहार : खरीफ फसल की कटाई के बाद नवरात्रि और दिवाली जैसे पर्व आते हैं। यह समय नए अनाज और बीजों का आशीर्वाद लेने का होता है।
- साझेदारी और सामूहिकता : गाँव के लोग सामूहिक रूप से पूजा, नृत्य, गीत और भोजन का आयोजन करते हैं।
- सांस्कृतिक पहचान : त्योहारों पर बने स्थानीय व्यंजन आने वाली पीढ़ी को अपनी परंपरा–पहचान से जोड़ते हैं।

नवरात्रि और दिवाली का सांस्कृतिक महत्व

- नवरात्रि : यह शक्ति की उपासना का पर्व है। आदिवासी परिवार 9 दिनों तक उपवास, भजन, गरबा–डांडिया, वाड़ी परंपरा और विशेष आहार की परंपरा निभाते हैं। उपवास के दौरान हल्का, पोष्टिक और स्थानीय खाद्य पदार्थों का सेवन किया जाता है।
- दिवाली : यह उत्सव अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का प्रतीक है। खेती के नए अनाज और घर के बने व्यंजनों के साथ दिवाली का आनंद दोगुना हो जाता है। परिवार में मिठाई, तिल–गुड़ और लापसी बनाकर बांटने की परंपरा स्वास्थ्य और भाईचारे को जोड़ती है।

त्योहारों और पारंपरिक व्यंजनों का पोषण संबंध

सत्तू

- तैयारी : चना, जौ या मक्का को भूनकर पीसकर बनाया जाता है।
- पोषण : इसमें प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम और आयरन भरपूर होता है।
- लाभ : बच्चों और महिलाओं के लिए ऊर्जा का अच्छा स्रोत। यह पचने में आसान और गर्मियों से शरद ऋतु में संक्रमण काल के लिए उपयुक्त भोजन है।



लापसी

- तैयारी : गेहूं के मोटे दलिये से घी, गुड़ और सूखे मेवे मिलाकर बनाई जाती है।
- पोषण : कार्बोहाइड्रेट, आयरन, कैल्शियम, प्रोटीन, एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर।
- लाभ – त्योहारों के दौरान यह व्यंजन शरीर को ऊर्जा देता है, साथ ही बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए पोषक आहार है।



तिल–गुड़ लड्डू/ चक्की

- तैयारी : तिल और गुड़ को मिलाकर लड्डू या चक्की बनाई जाती है।
- पोषण – तिल से कैल्शियम, फॉस्फोरस और हेल्दी



फैट्स मिलते हैं, जबकि गुड़ से आयरन और मिनरल्स।

- लाभ – हड्डियों को मजबूती, रक्त की कमी को दूर करने और सर्दियों से पहले शरीर को गर्मी देने में सहायक।

अन्य स्थानीय पकवान

- मक्के की रोटी और साग : कैल्शियम और फाइबर से भरपूर।
- भूगफली–गुड़ की चिककी : प्रोटीन और मिनरल्स से भरपूर।
- कोदरा–कूटकी की खिचड़ी : डायबिटीज और कमजोर पाचन वालों के लिए फायदेमंद।

पोषण विज्ञान की दृष्टि से लाभ

- त्योहारों में बनने वाले ये पारंपरिक व्यंजन केवल स्वाद के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं।
- ऊर्जा की आपूर्ति – कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन का संतुलन।
- मजबूत हड्डियाँ और रक्त निर्माण –तिल, गुड़ और दालों से आयरन व कैल्शियम की पूर्ति।
- पाचन स्वास्थ्य – मोटा अनाज और फाइबर से भरपूर भोजन।

संस्कृति, आस्था और प्रकृति का संगम

दक्षिणी राजस्थान, विशेषकर त्री–संगम पर स्थित वागड़ क्षेत्र, आदिवासी संस्कृति, परंपरा और प्रकृति के गहरे संबंधों का प्रतीक है। यहीं की लोक–जीवन व्यवस्था खेती, पशुपालन, वन संसाधन और धार्मिक आस्थाओं से जुड़ी हुई है। आदिवासी समाज में गाय को केवल एक पशु नहीं, बल्कि माँ, अन्नदाता और लक्ष्मी का रूपमाना गया है। उनके जीवन में गाय का स्थान आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक सभी दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

गाय का महत्व : आजीविका से लेकर धार्मिक आस्था

आदिवासी जीवन में गाय बहुआयामी भूमिका निभाती है :

- **जीविका का आधार** : खेत जोतने में बैल, गोबर खाद, दूध और दूध से बने उत्पाद ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं।
- **पवित्रता का प्रतीक** : गाय का गोबर और गौ–मूत्र, घर–आँगन की शुद्धि के लिए प्रयोग में लाया जाता है।
- **समृद्धि का सूचक** : घर में अधिक गायें होना संपन्नता का संकेत माना जाता है।
- **पारंपरिक औषधीय उपयोग** : गाय के गोबर, गौ–मूत्र, घी और दूध से कई प्रकार के पारंपरिक उपचार किए जाते हैं।

गाय और लक्ष्मी का सांस्कृतिक संबंध :

आदिवासी समाज में यह मान्यता प्रचलित है कि “जहाँ गाय रहती है, वहाँ लक्ष्मी निवास करती हैं।”इस मान्यता के कई सांस्कृतिक और धार्मिक आयाम हैं,



अलग तरह के प्राकृतिक रंगों से सजाया जाता है। गोबर से तोमड़ी को काटकर मेरिया बनाया जाता है यह कार्य सुबह चार बजे तैयार करके तेल का दीपक बनाकर गन्ने की लकड़ी में बांधकर उकेड़े के पास लगाया जाता है,उसमें दीया जलाया जाता है, मानो लक्ष्मी का स्वागत किया जा रहा हो। सुबह 7 बजे मेरिया में चावल, घी, दूध या मिठाई भरकर उकेड़े के पास उसकी पूजा की जाती है, इस पूजा के बाद ही घर के सदस्य भोजन करते हैं। भोजन करने के बाद समुदाय सदस्य गाँव की चोपाल पर इकट्ठे होकर एक दुसरे के गले मिलकर खुशी मनाते है।

पूजा की परंपरा : पूजा की परंपरा आदिवासी समुदायों में सरल, प्राकृतिक और भावनात्मक होती है।

- **स्नान और सजावट** : सुबह गाय को नहलाया जाता है, उसके गले में घंटियों और रंगीन डोरिया बाँधी जाती हैं।
- **गाय को गुड़ खिलाना** : पूजा के बाद गाय को गुड़, रोटी और चारा खिलाकर आशीर्वाद लिया जाता है।परिवार की समृद्धि की प्रार्थना परिवारजन करते हैं कि घर में हमेशा दूध, अनाज और शांति बनी रहे।

वागड़ क्षेत्र में कई लोक कथाएँ और कहावतें हैं जो गाय को लक्ष्मी के समान बताते हैं, लोक गाथाओं में भी कहा गया है कि जब भगवान ने मनुष्य को जीविका दी, तब गाय को ‘धरती की माँ’ कहा गया, जो हर घर की समृद्धि की रक्षक मानी जाती है।

गाय और खेती का पारंपरिक संबंध: आदिवासी खेती का आधार पशुपालन रहा है। गाय से मिलने वाला गोबर खेतों की उर्वरता बढ़ाने में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। गोबर से तैयार की गई ‘गोमूत्र और खट्टी छाछ की खाद’ या ‘जीवामृत’ प्राकृतिक खेती में उपयोग होती है। गाय का गोबर और राख मिलाकर घर की दीवारों पर लेप करना स्वच्छता और रोगनिरोध का प्रतीक है।

यह पारंपरिक ज्ञान गाय–लक्ष्मी पूजा के साथ ही पीढ़ियों से आगे बढ़ता आया है।

लक्ष्मी पूजा और गाय के प्रति आभार

आदिवासी समाज में दीपावली के दूसरे दिन “गौ–पूजा” या “गाय–लक्ष्मी पूजा” करते हैं।

इस दिन लोग मानते हैं कि गाय के रूप में लक्ष्मी धरती पर आती हैं।जो गाय की सेवा करता है, उसके घर में कभी धन और अन्न की कमी नहीं रहती।गाय को दु:ख पहुँचाना, लक्ष्मी का अपमान करना है। इसलिए इस दिन पशुधन की विशेष देखभाल की जाती है उन्हें आराम, अच्छा चारा और साफ पानी दिया जाता है।

अकाल से सुरक्षा

ऐसी मान्यता है कि इस दिन पूजा करने से परिवार में कभी भी अन्न की कमी नहीं होती और देवी अन्नपूर्णा की कृपा बनी रहती है।

महिलाओं और गाय की पूजा का सामाजिक पक्ष

आदिवासी महिलाओं का गाय से गहरा भावनात्मक संबंध होता है।वे हर सुबह गाय को दूध दोहते समय पहले कुछ बूँदें धरती पर टपकाकर मातृभूमि को अर्पण करती हैं।महिलाएँ मानती हैं कि गाय की सेवा से परिवार में शांति और समृद्धि बनी रहती है।कई जगह महिलाएँ “गाय–लक्ष्मी गीत”गाती हैं, जिनमें वे देवी लक्ष्मी से घर में अन्न, धन और सुख की कामना करती हैं।

लोकगीत और पारंपरिक संगीत में गाय

वागड़ क्षेत्र के लोक नृत्य, ढोल, थाली और नृत्य गीतों में गाय का उल्लेख आता है।

ये गीत दर्शाते है कि गाय केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि जीवन के हर भाव से जुड़ी हुई है।वर्तमान समय में पशुपालन की पारंपरिक पद्धतियाँ बदल रही हैं खेतों में रासायनिक खादों के उपयोग से गोबर की उपयोगिता कम आँकी जा रही है।शहरीकरण और भूमि की कमी से चारागाह घट रहे हैं। फिर भी आदिवासी समाज अब भी गाय–लक्ष्मी परंपरा को जीवित रखे हुए है।

वाग्धारा, स्वराज समूह के माध्यम से इस परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए समुदायों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं, ताकि पशुधन संरक्षण और सांस्कृतिक पहचान दोनों कायम रह सकें।

परंपरा से विकास की ओर

गाय और लक्ष्मी की पूजा केवल एक धार्मिक कृत्य नहीं है, बल्कि यह आदिवासी जीवन दर्शन का प्रतीक है, जो बताता है कि समृद्धि का मूल स्रोत मेहनत, प्रकृति से संतुलन और पशुधन का सम्मान है। दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी समुदाय ने इस परंपरा के माध्यम से यह सिखाया है कि जब हम गाय, जल, भूमि और प्रकृति का सम्मान करते हैं, तभी सच्ची लक्ष्मी का वास हमारे जीवन में होता है।



320 नन्ही आवाजें गूंज उठी

(बाल स्वराज समूह पायलट कार्यक्रम : अनुभव और सीख)

राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश से जुड़े 16 आदिवासी समुदायों के गाँवों में अगस्त 2025 से कुछ अद्भुत घटित हो रहा है। बाल स्वराज समूह के माध्यम से कुल 320 बच्चे हर महीने दो बार मिल रहे हैं। इन बैठकों के लिए दस गतिविधियों की योजना बनाई गई है,जिनके जरिए बच्चे शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, लैंगिक जागरूकता, कृषि और कौशल विकास जैसे विषयों की खोज और सीख कर रहे हैं। यह पहल बच्चों के लिए केवल गतिविधियाँ नहीं बल्कि उनकी सोच और भागीदारी में एक गहरा बदलाव लेकर आई है।

जब पहली बार इन सत्रों का आयोजन हुआ, तब यकीन ही नहीं था कि बच्चे कितनी जल्दी जुड़ेंगे। लेकिन बदलाव तुरंत और दिल को छू लेने वाला था। एक बैठक में एक संकोची लड़की ने स्वच्छता के बारे में बोलने से पहले झिझक दिखाई। उसकी आवाज पहले कांपी पर अंत तक वह आत्मविश्वास के साथ समझा रही थी कि वह अपने छोटे भाई–बहनों को हर भोजन से पहले हाथ धोने की याद दिलाएगी। ऐसे छोटे–छोटे क्षण यह साबित करते हैं कि बच्चों को जगह और अवसर मिलने पर उनका आत्मविश्वास कितनी जल्दी खिलता है।

बैठकों के दौरान बच्चों की हंसी और खेलों की गूँज चर्चाओं के समय उनके गंभीर चेहरे और कृषि तकनीकों को लेकर उनकी उत्सुक जिज्ञासाएँ बार–बार याद दिलाती हैं कि सहभागिता केवल उपरिथिति भर नहीं है यह स्वाभिम्व है। इन समूहों के बच्चे अब केवल सीखने वाले नहीं रहे वे जिम्मेदारी भी उठा रहे हैं। कुछ छोटे साथियों की गृहकार्य में मदद कर रहे हैं तो कुछ अपने परिवारों को स्वच्छता और शिक्षा के महत्व के बारे में बता रहे हैं।

इस पायलट कार्यक्रम का सबसे प्रेरणादायक अंश बालिकाओं की भूमिका में देखने को मिला है। जहाँ पहले वे बैठकों में चुपचाप रहती थीं वहीं अब वे आत्मविश्वास से अपनी राय रखती हैं और कई बार समूह का नेतृत्व भी करती हैं। यह बदलाव केवल उनके आत्मविश्वास तक सीमित नहीं है बल्कि पूरे समुदाय में एक नया संदेश दे रहा है कि लड़के और लड़कियाँ बराबर हैं और नेतृत्व की जिम्मेदारी दोनों उठा सकते हैं। **अब बालिकाएँ केवल सहभागी नहीं बल्कि बदलाव की अग्रदूत बन रही हैं।**

इस यात्रा ने उस गहरी धारणा को फिर मजबूत किया है कि ग्रामीण समुदायों में स्थायी बदलाव तभी संभव है जब बच्चे केवल ज्ञान के प्राप्तकर्ता न रहकर समाजबान गढ़ने के साझेदार बनें। बाल स्वराज समूह ने यह दिखा दिया है कि बच्चे जब अपनी बात रखने का अवसर पाते हैं तो वे न केवल अपनी जिंदगी बल्कि अपने परिवार और गाँव की दिशा भी बदल सकते हैं।

यह केवल एक कार्यक्रम नहीं है बल्कि एक ऐसा आंदोलन है जहाँ नन्ही आवाजें अब घरों और स्कूलों में गूंजने लगी हैं।

यह पायलट कार्यक्रम अभी जारी है और हर दिन नई सीखें सामने ला रहा है। समुदाय भी बच्चों की भागीदारी को पहचानने और महत्व देने लगा है। आगे बढ़ते हुए हमारा प्रयास होगा कि इन आवाजों को और मजबूत किया जाए। बच्चों द्वारा संचालित गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाए, उनके विचारों को दर्ज किया जाए और इस पहल को और अधिक गाँवों तक विस्तार दिया जाए। **“इन सत्रों में दिखी ऊर्जा और उत्साह इस बात का संकेत हैं कि आने वाला समय आत्मविश्वास, जागरूकता और साझा जिम्मेदारी से भरा होगा। वाग्धारा को विश्वास है कि बच्चों की यह भागीदारी न केवल समुदाय को मजबूत बनाएगी बल्कि हर गाँव में बदलाव की चिंगारी भी जगाएगी।”**



स्थानीय भाषा के उपयोग से आसान होता है बच्चों का हिन्दी भाषा सीखना

हमारे देश की असली ताकत उसकी विविधता है। अलग-अलग प्रदेश, अलग-अलग रीति-रिवाज और अलग-अलग भाषाएँ। राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में बच्चे अपनी-अपनी स्थानीय बोली वागड़ी को सुनते, बोलते और समझते हुए बड़े होते हैं। यह बोली ही उनकी पहली पहचान होती है। लेकिन जैसे ही बच्चा अपने घर और समुदाय की दहलीज पार करके विद्यालय में पहुँचता है, उसे एक नई भाषा हिन्दी भाषा का सामना करना पड़ता है। अपने घर और समुदाय में बोली जाने वाली वागड़ी बोली में बात करते हुए अचानक से विद्यालय की किताबें और शिक्षक द्वारा बोली जाने वाली हिन्दी को समझना बच्चों के लिए एक बहुत मुश्किल काम हो जाता है। ऐसे में बच्चे के सामने एक बिल्कुल नई दुनिया खुल जाती है।

आदिवासी समुदाय से बच्चे जब घर की दहलीज पार करके बाहर कदम रखते हैं और हिन्दी भाषा सीखने की ओर बढ़ते हैं, यह शुरू में उनको कठिन लग सकता है, कई प्रकार की मुश्किलों से गुजरना पड़ सकता है। लेकिन यह समझना बहुत आवश्यक है कि बोली उनकी जड़ है इससे उनको शक्ति प्राप्त होती है। बोली और हिन्दी भाषा साथ रहें तो अच्छा है क्योंकि यही सच्चा संतुलन है। और समुदाय, परिवार, विद्यालय और सरकार मिलकर अगर इस संतुलन को बनाये रखने में सहयोग करें तो इन मुश्किलों से बाहर आने की यात्रा में बच्चे आनंद की अनुभूति और ढेरों अवसर प्राप्त कर सकते हैं।



घर की भाषा—अपनापन और सहजता

यह स्थानीय भाषा बच्चे की पहली भाषा है जिसे वह घर से सीखता है। बचपन में माँ जब लोरी गाती है तो वह स्थानीय बोली में ही होती है। दादी जब कहानी सुनाती है, तो उसमें स्थानीय कहावतें और मुहावरे झलकते हैं। घर में उनके माता-पिता, दादी-दादा और अन्य सभी सदस्यों के साथ आस-पास के लोग और रिश्तेदार भी स्थानीय बोली में बात करते हैं। खेत, जंगल, नदियों और त्योहारों से जुड़ी बातें सब इनकी स्थानीय बोली में कही जाती हैं। इनमें उनको अपनापन महसूस होता है और सबसे महत्वपूर्ण बात कि इस बोली में बच्चे की भावनाएँ जुड़ी होती हैं। बच्चों के लिए आसानी से समझी जाने वाली बोली में किसी के भी साथ वे बिना किसी झिझक के बातचीत और अपने विचारों को साझा कर लेते हैं क्योंकि सोचने और खेलने के दौरान स्थानीय भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, और जब वे सपने देखकर उनको अभिव्यक्त करते हैं तो स्थानीय भाषा का ही सहयोग लेते हैं। अर्थात् ऐसा माना जा सकता है कि हर बच्चा अपने घर में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा के माध्यम से पहले घर और बाद में बाहर की दुनिया को पहचानना शुरू करता है। इसके माध्यम से बच्चा दुनिया समझना शुरू करता है।

घर और समुदाय से बाहर की दुनिया—विद्यालय में हिन्दी भाषा के साथ का नया सफर

विद्यालय की घंटी बजते ही बच्चे विद्यालय के साथ-साथ एक दूसरी भाषा की दुनिया में भी प्रवेश करते हैं। शिक्षक सभी विषयों को हिन्दी में पढ़ाते हैं। किताबें पूरी तरह हिन्दी में लिखी होती हैं। कई बार दोस्तों के बीच भी “सही हिन्दी” बोलने का दबाव बच्चों पर होता है। इससे भी आगे विद्यालय के बाहर जब बाजार, अस्पताल या पंचायत दफ्तर जाते हैं, तो वहाँ ज्यादातर लोग हिन्दी में बात करते हैं। ऐसे में बच्चों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बच्चा हिन्दी बोलते समय हिचकिचाता है, मजाक उड़ने का डर रहता है। कई बार शिक्षक स्थानीय बोली को महत्व नहीं देते, जिससे बच्चे और डर जाते हैं। बच्चों के पास इस नई भाषा से दोस्ती करने के संसाधन जैसे चित्र वाली हिन्दी किताबें या खेल आधारित गतिविधियाँ आदि कम होते हैं। विद्यालय में बच्चा शुरुआत में ही डर जाता है। उसे

लगता है कि उसकी बोली कोई नहीं समझेगा। वह चुप रहने लगता है। उसे लगता है कि वह नहीं समझ पाएगा। और इसी भय, संकोच और झिझक के कारण कई बार बच्चे कक्षा में सबसे पीछे भी बैठना शुरू कर देते हैं। समय रहते अगर शिक्षक और समुदाय का सहयोग मिले तो बच्चों के लिए यह नई भाषा सीखने की प्रक्रियाओं को आनंददायी बनाया जा सकता है। क्योंकि असल में, जो बच्चा अपनी बोली को अच्छे से जानता है, वह हिन्दी भी जल्दी सीखता है। हिन्दी सीखना उनके लिए जरूरी हो जाता है। इस भाषा को सीखने से बच्चों के सामने नई संभावनाएँ खुलती हैं वे किताबें और अख़बार पढ़ सकते हैं। सरकारी योजनाएँ और सेवाएँ समझ सकते हैं। आगे पढ़ाई और नौकरी के लिए रास्ते खुलते हैं। अलग-अलग गाँव और समाज से जुड़ने का अवसर मिलता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं की उनकी अपनी बोली कमजोर है।

विद्यालय की भूमिका

- किसी भी भाषा को सिखाने की 4 प्रक्रियाएँ होती हैं—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। शिक्षक को चाहिए कि वे स्थानीय बोली का सम्मान करें और धीरे-धीरे हिन्दी सिखाएँ। बच्चों को हिन्दी भाषा तुरंत समझ में आ जाये ऐसी अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।
- हिन्दी को एक नई भाषा के रूप में सिखाने के लिए स्थानीय भाषा के सहयोग से बच्चों के साथ छोटे-छोटे वाक्य (3-4 शब्दों वाले) हिन्दी में बोलें। इन नए शब्दों और वाक्यों की पढ़िकाएँ बनाकर दीवारों पर चिपका देने से बच्चों को याद करने में आसानी होगी।
- शिक्षक विद्यालय में चीजों पर उनके नाम की पर्ची बनाकर लगा दे जैसे—दीवार, कुर्सी, मेज आदि। बच्चे जब हमेशा इन चीजों को नाम के साथ देखेंगे तो जल्दी सीखेंगे।
- बच्चों को छोटी-छोटी कविताएँ हिन्दी में करवाना और उनको लिखकर दीवार पर चिपका देने से वे हिन्दी भाषा से सहज ही जुड़ सकेंगे।
- जो कहानी बच्चों ने अपने घर में बुजुर्गों से (दादी-दादा, नानी-नाना) स्थानीय भाषा में सुनी है विद्यालय में शिक्षक उसी कहानी को हिन्दी में सुनाये। यही बोली और हिन्दी भाषा का संगम है।
- इस कहानी को सुनाकर बच्चों से पात्रों के छोटे-छोटे अभिनय हिन्दी में करवायें।
- जानवरों के नाम हिन्दी भाषा में बताना।
- शिक्षक के मार्गदर्शन के साथ किसी विषय पर बच्चे बोलें, इस चर्चा के दौरान माहौल हल्का-फुल्का रखें ताकि बच्चे खुलकर बोलें।

बाल स्वराज समूह की बैठक

- रविवार या छुट्टी के दिन बाल स्वराज समूह के सभी सदस्य, बड़े बच्चों के सहयोग से हिन्दी में कविता, कहानी या नाटक का अभ्यास करें। इसके लिए बालगीत, कहानी या नाटक की व्यवस्था की जरूरत लगे तो समूह की बैठक के दौरान बात करें और समुदाय सहजकर्ता इसे उपलब्ध करवाने में सहयोग करें।
- बाल स्वराज समूह की बैठक में गाँव के बुजुर्ग स्थानीय बोली में कहानी सुनाएँ और पूरी कहानी सुन लेने के बाद समूह की बड़े बच्चे सुनी हुई कहानी को हिन्दी में सुनाएँ। अगर बच्चों द्वारा कहानी सुनाये जाने की प्रक्रिया के दौरान किन्ही शब्दों को हिन्दी में अनुवाद करने में परेशानी आती हो तो समुदाय सहजकर्ता से सहयोग लिया जा सकता है।
- बाल स्वराज समूह की बैठक के दौरान बच्चों के साथ आयोजित खेल और गतिविधियाँ जैसे—कबड्डी, रस्सी कूद, कंची खेल के दौरान हिन्दी शब्दों को काम में लेना।
- समुदाय में सार्वजनिक चीजों के हिन्दी नाम सिखाने के लिए भी नाम की पर्ची या वाक्य बनाकर चिपकाया जा सकता है उदाहरण के लिए—यह नीम का पेड़ है ऐसी एक पढ़िका बनायें और कुछ समय के लिए नीम के पेड़ पर चिपका दें, इसी

प्रकार से चौपाल पर बनी जगहों पर भी वाक्य पढ़िकाएँ बनाकर चिपकाई जा सकती हैं।

- गाँव का वातावरण भी भाषा सिखाता है। बड़े बच्चों के लिए पंचायत की बैठकें सुनना फायदेमंद है। वहाँ हिन्दी भी बोली जाती है।

सरकार की भूमिका

- द्विभाषी पाठ्यपुस्तकों का विकास** — प्राथमिक स्तर तक की प्रत्येक कक्षा की पुस्तकों में स्थानीय और हिन्दी दोनों भाषा को मिलाकर पाठ्य सामग्री तैयार की जाए। जैसे — एक ही कहानी को पहले स्थानीय भाषा में और फिर हिन्दी में प्रस्तुत किया जाए।
- शिक्षक प्रशिक्षण** — शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान सिखाया जाए कि बच्चों की स्थानीय भाषा को शिक्षा का सहारा बनाकर हिन्दी सिखाएँ। और द्विभाषी पद्धति पर नियमित कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण अनिवार्य हों।
- स्थानीय भाषाओं के शिक्षक की नियुक्ति** — आदिवासी और बहुभाषी क्षेत्रों में स्थानीय भाषा बोलने वाले सहायक शिक्षक रखे जाएँ। इससे बच्चों और शिक्षकों के बीच भाषा की खाई नहीं रहेगी। और स्थानीय संस्कृति और बोली के साथ सामंजस्य स्थापित किया जाना आसान हो जाएगा।
- स्थानीय भाषा आधारित डिजिटल सामग्री** — डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थानीय भाषाओं में वीडियो, ऑडियो, कहानियाँ और खेल उपलब्ध कराए जाएँ। इन्हें धीरे-धीरे हिन्दी शब्दों और वाक्यों से जोड़ा जाए।
- समुदाय की भागीदारी** — गाँव के बुजुर्गों, कलाकारों और कहानीकारों को विद्यालयी गतिविधियों में शामिल किया जाए। स्थानीय लोक कहानियाँ, लोक गीत और लोकोक्तियों को हिन्दी भाषा सीखने का माध्यम बनाया जाए।
- निगरानी और मूल्यांकन** — यह देखा जाए कि किस हद तक बच्चों को हिन्दी सीखने में स्थानीय भाषा मदद कर रही है। इसके लिए विशेष बेसलाइन और एंडलाइन आंकलन किए जाएँ।
- राज्यवार भाषा नीति का निर्माण** — हर राज्य अपने स्थानीय भाषाई परिदृश्य को देखते हुए विद्यालयी शिक्षा के लिए मातृभाषा-हिन्दी मिश्रित नीति बनाए। उदाहरण : राजस्थान में भीली, वागड़ी, गरासिया आदि बोलियों को प्रारंभिक शिक्षा से जोड़ा जाए।
- पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर प्राथमिकता** — आंगनवाड़ी और कक्षा 1-3 में मातृभाषा का अधिक उपयोग किया जाए। धीरे-धीरे हिन्दी की ओर सहज परिचय कराया जाए।
- शोध और नवाचार को बढ़ावा** — विश्वविद्यालयों और शिक्षा संस्थानों को विद्यालयी भाषा आधारित हिन्दी शिक्षण पर शोध करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। और शोध से प्राप्त आँकड़ों के अनुरूप अच्छे मॉडलों को पूरे राज्य या देश में लागू किया जाए।
- शिक्षण** — अधिगम सामग्री (TLM) का निर्माण-बच्चों की बोलियों में चार्ट, प्लेश कार्ड, कहानी कार्ड और खेल तैयार किए जाएँ। इन्हें हिन्दी शब्दों से जोड़ा जाए ताकि बच्चों को अनुवाद की बजाय सीधा अनुभव से भाषा सीखने का अवसर मिले।

निष्कर्ष — अपनी संस्कृति और स्थानीय भाषा को एक साथ पिरोकर बच्चा जब एक नई भाषा सीखने की प्रक्रिया में नया शब्द बोलता है तो निश्चित ही उसे खुशी मिलती है। उसका चेहरा चमक उठता है। उसे लगता है कि उसने कुछ नया पा लिया है। शिक्षक भी मुस्कराते हैं और परिवार के लिए भी ये गर्व करने वाले क्षण होते हैं। ये पल बच्चे की ताकत बढ़ाकर और उसके सीखे हुए को पक्का करता है। व आगे बढ़ने के लिए रास्ता खोलते हैं।

गाँव के पढ़े-लिखे युवा छोटे बच्चों को भाषा साथी बनकर मदद करें।



मानसून के वृक्षारोपण का प्रबंधन

वागड़ राजस्थान का दक्षिणी आदिवासी अंचल है, यहाँ की जलवायु उष्ण कटिबंधीय है, जहाँ मानसून के दौरान पर्याप्त वर्षा होती है। आदिवासी किसान मानसून में आम, नींबू, अमरूद, केला, पपीता, सागौन, साल, बांस एवं स्थानिय पौधे लगाते हैं। ठण्ड के मौसम में तापमान गिर जाता है और पाले का खतरा रहता है। ऐसी स्थिति में मानसून में लगाए गए पौधों का विशेष प्रबंधन आवश्यक है ताकि वे सुरक्षित रह सकें।

ठण्ड का मौसम पौधों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। जब तापमान नीचे चला जाता है तो पौधों की कोशिकाओं के अंदर की नमी जम जाती है और पौधों की ऊतक संरचना को नुकसान पहुँचाती है। पाले की स्थिति में पत्तियाँ जलकर काली पड़ जाती हैं, टहनिया सूख सकती हैं और वृद्धि रुक जाती है। मिट्टी में नमी का स्तर भी कम हो जाता है जिससे पौधों को पानी की कमी होने लगती है।

पौधा / फसल	संवेदनशीलता	समस्या
आम	मध्यम	पाले से कोमल पौधे प्रभावित
नींबू/संतरा	उच्च	पत्तियाँ झुलसना, फूल झड़ना
जामफल	मध्यम	शाखाएँ फटना, फल गुणवत्ता में कमी
पपीता	अत्यधिक	पाले से पूरा पौधा सूख सकता है।
केला	अत्यधिक	तना काला पड़ना।
सागौन/साल/बांस	कम	वृद्धि धीमी होना।

सामान्य प्रबंधन उपाय

- सिंचाई प्रबंधन : 10-15 दिन में हल्की सिंचाई करें, पाले से पहले पानी देना लाभकारी है।
- मल्विंग : पौधों की जड़ों के चारों ओर पुआल, घास या पत्तियाँ बिछाएँ।
- पाले से बचाव : धुआँ करें, पौधों को बोरी/कपड़े से ढकें।
- खाद : गोबर खाद, राख डालें।
- रोग प्रबंधन : बोर्डो पेस्ट और कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें।
- छंटाई : कमजोर और सूखी शाखाओं को काट दें।

पारंपरिक और स्थानीय उपाय

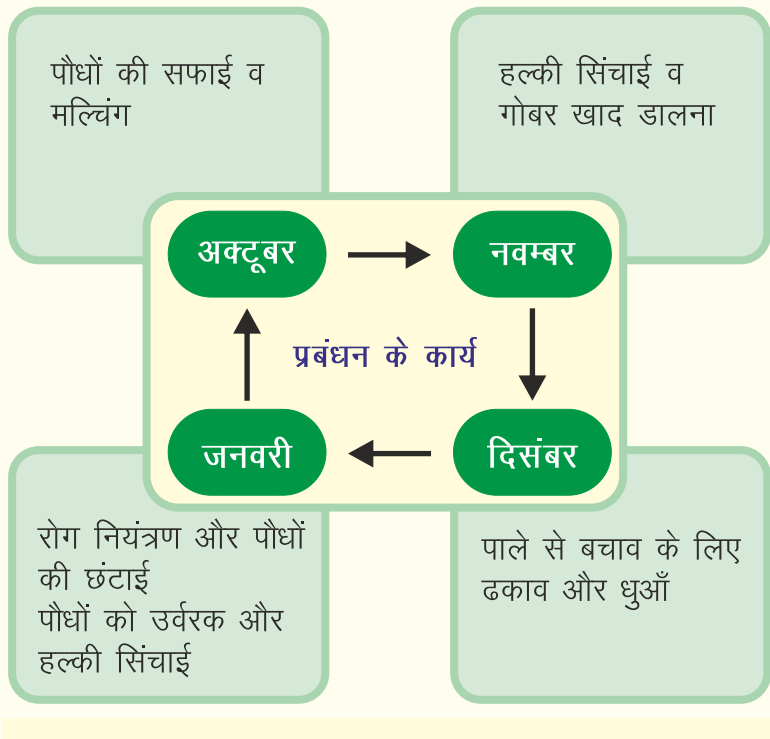
वागड़ के आदिवासी किसान पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करके पौधों की सुरक्षा

करते हैं। वे पौधों के चारों ओर पुआल, राख और गोबर डालते हैं। ठण्डी रातों में खेतों में ढेर जलाकर धुआँ किया जाता है ताकि पाला न जम सके। छोटे पौधों को घास की टोकरियों से ढकने की भी प्रथा है।

आर्थिक और सामाजिक महत्व

मानसून के पौधों की सुरक्षा करना किसानों की आजीविका के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि पौधे सुरक्षित रहते हैं तो भविष्य में फल, चारा और लकड़ी का अच्छा उत्पादन मिलता है। पौधों के मरने से किसान को पुनः पौधरोपण करना पड़ता है, जिससे समय और धन दोनों का नुकसान होता है। इसलिए ठण्ड के मौसम में पौधों का प्रबंधन सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

प्रबंधन के प्रमुख कार्य



मानसून में लगाए गए पौधों की सबसे बड़ी चुनौती ठण्ड के मौसम में पाले और ठण्डी हवाओं से सुरक्षा है। यदि किसान नियमित सिंचाई, मल्विंग, ढकाव, खाद और पारंपरिक उपाय अपनाएँ, तो पौधे सुरक्षित रहेंगे और आने वाले वर्षों में अधिक लाभ देंगे। वागड़ में इस तरह के प्रबंधन उपाय हरित आवरण, पर्यावरणीय संतुलन और किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में सहायक होगा।



कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई-माही राजस्थान

प्रिय किसान साथियों, राम राम

अक्टूबर माह हमारे लिए न केवल मौसम के बदलाव का संकेत है, बल्कि यह नये विचारों, योजनाओं और प्रयासों का समय भी है। यह समय है जब हम अपनी मेहनत का फल पाना शुरू करते हैं, और साथ ही आने वाली रबी फसलों की बुवाई की तैयारी भी करनी होती है। अक्टूबर माह में खेतों में कड़ी मेहनत की आवश्यकता है, क्योंकि यह समय अब तक की मेहनत के परिणामों को संजोने का है, और साथ ही अगले चरण की तैयारियों का भी।

रबी फसल की बुवाई की तैयारी

किसान भाई-बहनों, अक्टूबर माह में रबी फसलों की बुवाई की योजना बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस माह गेहूँ, मक्का, ज्वार, मटर, मसूर, चना, सरसों और अलसी जैसी प्रमुख रबी फसलों की बुवाई का समय है। इसके लिए हमें कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना होगा :

- खेतों की तैयारी : भूमि का उचित रूप से जुताई और पलवार (रेडीकरण) करना जरूरी है। यह भूमि को हवा और पानी के लिए तैयार करता है।
- बीजों की गुणवत्ता : बुवाई से पहले बीजों की सही गुणवत्ता की जांच करें और किसी प्रकार के बीमारी से बचाव के लिए बीजों को उपचारित करना न भूलें।
- इस समय सिंचाई की व्यवस्था सही तरह से सुनिश्चित करनी चाहिए, क्योंकि रबी फसल के लिए पानी का प्रबंधन बेहद आवश्यक है। जलवायु में बदलाव के कारण, जल की कमी हो सकती है, इसलिए जल का सदुपयोग करें।



महिला किसानों की भूमिका

अक्टूबर माह में महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। इस माह का अंत आते-आते **“पोषण माह”** की शुरुआत होती है, जो गाँव के हर परिवार को पोषण के महत्व के बारे में जागरूक करता है।

- **पोषण वाटिका (सब्जी बाड़ी) :** घर के पास छोटे-छोटे बाग लगाए जाएं, जिनमें पोषक सब्जियाँ उगाई जाएं। यह सिर्फ स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, बल्कि परिवारों को आर्थिक रूप से भी समृद्ध बना सकता है।
- **पारंपरिक और पोषक आहार :** महिलाओं को स्थानीय व पोषक आहार जैसे दाल, चावल, ताजे फल और सब्जियाँ अपनाने के लिए प्रेरित करें।
- अक्टूबर माह में पारंपरिक खेती को बढ़ावा देने के लिए जो पहल महिलाओं के साथ मिलकर शुरू की गई थी, वह अब एक नई दिशा में आगे बढ़ रही है। पहले एक गाँव में एक सक्षम समूह बनते थे, लेकिन अब हर गाँव में 3-4 सक्षम समूह बनाए जा रहे हैं। इन समूहों का उद्देश्य पारंपरिक कृषि विधियों को पुनः स्थापित करना और गाँववासियों को एकजुट करना है। विशेष रूप से महिलाएं इस पहल में नेतृत्व का रोल निभा रही हैं, जो न केवल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है, बल्कि गाँव के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

ग्राम विकास योजनाएं

महात्मा गांधी जयंती (02 अक्टूबर) के अवसर पर ग्राम पंचायतों में ग्राम विकास प्रस्ताव और योजनाओं की तैयारी की जाएगी। यह अवसर है जब हम मिलकर अपने गाँव की मुख्य समस्याओं और उनकी जरूरतों का विश्लेषण



करेंगे, और सामूहिक प्रयासों से उन्हें सुलझाने के लिए योजनाएं तैयार करेंगे। नीचे प्रत्येक पहलू के बारे में विस्तार से जानकारी दी जा रही है, जो हमें ग्राम विकास में मदद करेगी :

1. सड़कें और परिवहन :

- सड़क निर्माण : प्रमुख मार्गों का पक्का करना और कच्ची सड़कों को पक्का करना।
- सुरक्षा उपाय : प्रमुख चौराहों पर संकेतक और स्ट्रीट लाइट्स की व्यवस्था करना।
- पैदल मार्ग : सार्वजनिक स्थानों और स्कूल-अस्पताल जाने के लिए सुरक्षित फुटपाथ का निर्माण।

2. पानी और जलस्त्रोत प्रबंधन :

- जलस्त्रोतों की सफाई : तालाब, कुएं और जलाशयों की सफाई और पुनर्निर्माण।
- वर्षाजल संचयन : घरों में वर्षाजल संचयन प्रणाली और जलाशयों का निर्माण।
- सिंचाई प्रणाली : ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई की व्यवस्था।

3. स्वास्थ्य और शिक्षा :

- स्वास्थ्य सेवाएं : प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना और नियमित टीकाकरण अभियान।
- शिक्षा : स्कूलों के लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण
- कौशल विकास : कौशल प्रशिक्षण केंद्र और युवाओं के लिए रोजगार योजना।

4. स्वच्छता :

- स्वच्छता अभियान : कचरा प्रबंधन, सार्वजनिक स्थानों की सफाई और जल स्रोतों का संरक्षण।

5. कृषि और ग्रामीण विकास :

- कृषि उपकरण : उन्नत बीज, जैविक खाद, और कृषि उपकरणों का वितरण।
- विपणन व्यवस्था : किसानों के उत्पादों के लिए विपणन केंद्र और गोदामों की व्यवस्था।
- पशुपालन : पशुपालन के लिए प्रशिक्षण व संसाधन उपलब्ध कराने के साथ ही पशुघर और कम्पोस्ट पिट का निर्माण करवाना।

आपकी सक्रिय भागीदारी इन योजनाओं को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, और यह सुनिश्चित करेगा कि हमारे गाँव का विकास सही दिशा में हो।

पारंपरिक परंपराओं की महत्ता:

प्रिय बच्चों, हमें यह समझने की जरूरत है कि हमारे पूर्वजों की कृषि परंपराएँ न केवल धार्मिक अनुष्ठान थीं, बल्कि वे एक विज्ञान और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने का माध्यम थीं। गोबर की खाद का उपयोग, फसलों का चक्र बदल-बदल कर उगाना, और जल संरक्षण की प्राचीन विधियाँ आज भी हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम इन परंपराओं को पुनः अपनाकर अपनी मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं, और साथ ही कृषि को एक स्थिर और समृद्ध भविष्य दे सकते हैं। आइए, हम सब मिलकर अक्टूबर माह में इन पहलुओं को आगे बढ़ाएं, अपनी परंपराओं को याद करें और आधुनिक कृषि तकनीकों से जोड़ते हुए अपने गाँव की प्रगति में योगदान दें। हम सभी मिलकर अपने गाँव को स्वस्थ, समृद्ध और खुशहाल बना सकते हैं।



जैविक सब्जी उत्पादन

नाम : गोतमी पारगी
पति : सोहन लाल पारगी
उम्र : 30 वर्ष,
शिक्षा : 5वीं
परिवार सदस्य : 6
बच्चे : 1 बालक, 2 बालिका

पति अकेले के ऊपर थी इस हेतु मजदूरी के लिए गुजरात जाते थे , तीन माह तक काम किया उसके बाद में बीमार हो गयी बीमार होने के कारण मैं और मेरे पति सोहनलाल दोनों घर गाँव आ गये। घर आने के बाद मैं 6 माह तक बीमार रही उस के 2 माह बाद पथरी का ऑपरेशन करवाया गया तब मुझे डॉ. ने हरी सब्जी खाने के लिए बोला तब मेरे पति सोहनलाल में 15 दिन तक बाज़ार से सब्जी लाये उसके बाद लाना बंद कर दिया, जिस का मुख्य कारण बाज़ार दूर होना था।

इस दौरान मुझे पता चला मेरे गाँव में वाग्धारा संस्था से सब्जी के बीज मिल रहे है मैंने मांगा लेकिन मुझे मिला नहीं तब मुझे गाँव की अन्य महिला ने बताया की पहले समुह में जुड़ना पड़ेगा। फिर मैंने पूछा की जुड़ने के लिए किससे बात करनी पड़ेगी फिर मैं वहाँ पर वाग्धारा संस्था से आये कार्यकर्ता से मिली उस समय तक मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था की मैं क्या करू, तब मैंने संस्था से आये कार्यकर्ता से समूह में जुड़ने को लेकर बात कही तब उन्होंने मेरा नाम , मेरे पति का नाम, आधार नंबर लिया। मेरा नाम लिखा और मेरे से पूछा की आप

मजदूरी के लिए कहा जाते हो तब मैंने कहा गुजरात जाते थे लेकिन अब नहीं जाते है, तब संस्था कार्यकर्ता ने कहा की फिर ठीक है प्रति माह बैठक में भागीदारी करनी होगी। तब मैंने कहा की मैं अभी पलायन पर नहीं जा रही हूँ। 5 बीघा जमीन हैं। जिसमें अभी 2 बीघा में ही खेती करते है, लेकिन फिर भी परिवार का गुजारा नहीं हो पाता है। इसलिए मजदूरी हेतु गुजरात जाते है, मेरी तबियत खराब होने के कारण डॉ. ने मुझे हरी सब्जी खाने के लिए बोला है अब आप तो जानते हैं कि अपने यहाँ से बाज़ार कितना दूर है और हरी सब्जी कितनी महँगी मिलती है।

इस तरह मैं 2022 में वाग्धारा संस्था द्वारा संचालित समूह में जुड़ी और प्रति माह होने वाली बैठक में भाग लेने लगी निरंतर बैठक में जाने से पशुपालन और पोषणवाड़ी और जैविक खेती के बारे जानकारी हुई। बैठक में भाग लेने से मुझे जो सीख मिली उससे मैंने मेरे घर पर छोटी सी वाड़ी लगाई जिसमें मैंने घर में उपयोग हेतु सब्जी करने लगी, जिससे मेरे रोज का जो सब्जी का खर्चा होता था वह पैसा बचने लगा जो घर के अन्य जगह काम आने



लगा तो यह मुझे अच्छा लगा। यह सब मैंने अपने पति के साथ बात की तो उन्होंने मुझे सहयोग किया की आप और सीखो हम मिलकर और अच्छा करेंगे। मैंने पोषणवाड़ी में मिर्ची, बेंगन, टमाटर, हरी मिर्च, मैथी, पालक, हरा धनिया और कई प्रकार की हरी सब्जी जिस का उत्पादन कर खाने में उपयोग करने से धीरे-धीरे मेरा स्वास्थ्य भी ठीक होने लगा। अधिक सब्जी होने पर कुछ तो घर में उपयोग हो जाती और जो बचती उसको गाँव के पास के बाज़ार में बेचती थी। जिससे मुझे कुछ आय होने लगी जो लगभग 700-800 रुपये तक हो जाती थी। इन सभी चीजों ने मुझमें काफी उत्साह भर दिया। मैं मेहनत करने लगी, और इस प्रकार पुरे माह में 12 से 15 दिन सब्जी बेचती थी तो मुझे 3000 रुपये तक की आय होने

लगी जो मुझे मेरे परिवार को काफी सहयोग मिलने लगा। इस प्रकार मैंने गर्मी में भी फसल की जिसमें ग्वार, भिण्डी, ककड़ी, धनिया आदि पोषणवाड़ी में लगाया उसके बेचने से 300 रुपये प्रति दिन के हिसाब से आय होती थी और पुरे माह की 7000 रुपये तक आय होने लगी।

इसी के साथ सुखमणि भी करती हूँ। देशी बीजों को बचाना सीखा और बीजों का रख-रखाव भी सीखा, जब मैं सक्षम समूह की सदस्य बनी तब से मैं किचन गार्डन कर सब्जी के पोष तैयार किया और पोषे तैयार होने के बाद मैंने और मेरे पति सोहनलाल ने 1 बीघा में टमाटर, बेंगन और हरी मिर्च, मैथी, धनिया किया यह अधिक उत्पादन होने पर बाज़ार में बेचती थी, धीरे-धीरे एक साल बाद मेरे पति ने 1 टेम्पो लिया जिसमें सब्जी भर कर बेचने जाते है। इस प्रकार यह आमदनी बढ़कर 3000 होने लगी, एक माह कुल आमदनी 80000 रुपये तक हो जाती है इन सब से हमारे परिवार को काफी सहयोग मिला। वाग्धारा संस्था से जुड़ने से मेरे परिवार में बहुत बदलाव आया और आर्थिक स्थिति अच्छी हुई और साथ ही खेती में भी बढ़ोतरी हुई। मैं व मेरा परिवार वाग्धारा संस्था को धन्यवाद देता है और सभी से कहना चाहती हूँ की जैविक खेती करे और परिवार का स्वास्थ्य अच्छा रखे **“परिवार और स्वास्थ्य ही हमारी सम्पति है।”**



पत्रिका के सभी पाठकों को हिरण कार्यान्वयन इकाई की ओर से राम राम!!

प्रिय साथियों वर्षा ऋतु लगभग पूरी हो चुकी है खरीफ कि फासले काटने हेतु तैयारी व रबी की फसल हेतु किसान तैयारी कर रहा है इस साल शुरुआत में मानसून थोड़ा कमजोर रहा परन्तु जाते-जाते हमारे वागड़ की जीवनधारा माहीबांध छलक गया है और स्थानिय नदियाँ उफान का इंतजार करती रह गईं। तो साथियों वाते पत्रिका के इस संस्करण में बात करते है हिरण कार्यान्वयन इकाई में क्रियान्वित होने वाली अक्टूबर माह की गतिविधियों के बारे में।

ग्राम विकास कार्य योजना : ग्राम विकास कार्य योजना का निर्माण में ग्राम स्वराज समूह द्वारा इस कार्य योजना के निर्माण में सहयोगी कि भूमिका रहेगी, यह कार्य योजना पुरे वर्ष को ध्यान में रख कर बनाई जाएगी जिसमे मुख्य रूप से जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, गाँव में आधारभुत सुविधाएँ, आवागमन की सुविधाएँ, बच्चों के खेलने हेतु मैदान, विद्यालय हेतु सुविधाए, आंगनवाड़ी संबंधित, पौधा रोपण, पशुपालन, चारागाह आदि सभी गाँव के विकास से जुड़ी सुविधाओं एवं भविष्य में गाँव में रोजगार, रथाई आजीविका मिल सके इन कार्यों को प्राथमिकता से ग्राम विकास हेतु बनाई जा रही योजना में शामिल करावे और ग्राम सभा में इसे प्रस्तुत करे ताकि यह आने वाले वर्ष कि वार्षिक कार्य योजना का हिस्सा बन सके।

ग्राम सभा : आगामी 02 अक्टूबर को ग्राम सभाए आयोजित होगी। यह सभाएं बहुत ही महत्वपूर्ण है क्युकि ग्राम पंचायत के वर्तमान सरपंच साहबों के नेतृत्व में इस कार्यकाल कि आखिरी ग्राम सभा होगी और यह इसलिए भी मतपूर्ण है क्युकि भविष्य के सरपंच यदि नए बने तो उन्हें ग्राम पंचायत का कार्य समझाने में समय लग सकता है अंतः यह ग्राम विकास की योजना उन्हें क्रियान्वन में मदद मिलेगी। सभी ग्राम पंचायत वासियों को ग्रामसभा में भाग लेना चाहिए क्युकि आपके ग्राम पंचायत का विकास इसी से तय होता है अंत इस ग्राम सभा में सक्रिय भागीदारी करे और साथ ही वंचित वर्ग को विकास से जोड़ने में अपनी भूमिका निभावे।

रबी फसल : किसान भाई खरीफ की फसल कटाई के बाद जो चना की फसल करना चाहते है या जिनके पास सिंचाई कि सुविधा नहीं है या समित है। वह किसान खेत कि नमी का उचित उपयोग कर चने कि फसल लगा देंगे। बीज को संभालेंगे और जिनके पास बीज की कमी है वह आदान प्रदान कर उन्हें पूरा करे। रबी की फसल हेतु नमी को संधारण करना और उसका उपयोग करना अत्यंत महत्पूर्ण है। रबी की फसल से पूर्व सभी किसान परिवार , सक्षम समूह के सदस्य और ग्राम स्वराज समूह के सदस्य मिल कर खरीफ फसल बुवाई से पूर्व आयोजित बीजोत्सव की तरह रबी में भी बीजोत्सव का आयोजन कर बीज आदान प्रदान की परम्परा को आगे बढ़ावे।

किसान खेत पाठशाला : अक्टूबर माह में किसान खेत पाठशाला में मुख्य रूप से खरीफ की फसल कटाई, मुड़ाई एवं भण्डारण, में ध्यान रखने योग्य बातों पर संवाद एवं प्रदर्शन आयोजित होगा जसमे मुख्यतः सुखमनी, बीज का चयन एवं रखरखाव आदि। खेत में नमी प्रबंधन, रबी फसल हेतु खेत की तैयारी, उर्वरक, बीज प्रबंधन, बीज उपचार, अंकुरण आदि पर प्रदर्शन किये जायेगे। साथ में उर्जा स्वराज खाद्य एवं पोषण स्वराज हेतु किसान खेत पाठशाला का आयोजन होगा।

ग्राम स्वराज समूह : इकाई के सभी 276 गांवों में ग्राम विकास हेतु बनी ग्राम विकास योजना को ग्रामसभा में प्रस्तुत करने में मुख्य भूमिका होगी तथा यह भी सुनिश्चित करना होगा की अपने गाँव के सभी परिवार ग्रामसभा में भागीदारी करे तथा वंचित वर्ग को चिहित कर परिवार कि व्यक्तिगत योजना ग्राम सभा में प्रस्तुत करवाने में मदद करावे। ग्राम स्वराज समूह कि नियमित बैठक हर माह की तरह इस माह सभी 276 ग्राम स्वराज समूह की बैठक का आयोजन होगा और ग्राम विकास के ठोस निर्णय लिए जायेंगे। ग्राम स्वराज समूह पुरानी प्रथाओं को जीवित करने हेतु कुछ गतिविधियाँ अपने नेत्रत्व में आयोजित करवाये एवं उसमे मुख्य भूमिका निभाये, उदारण के लिए जैसे हलमा आदि।

सक्षम समूह : हर माह कि भांति सभी 276 सक्षम समूह की मासिक बैठक का आयोजन होगा। जिसमें अक्टूबर माह में खेती बाड़ी में आयोजित होने वाली गतिविधियों पर विस्तार पूर्वक मंथन होगा। संवाद में खरीफ कि फसल में उत्पादन, बीज स्वराज हेतु बीज रखरखाव, सुखमनी, रबी फसल कि तैयारी , बीज आदान प्रदान पर संवाद के बाद किसान खेत पाठशाला में सहभागिता करना , ग्राम विकास योजना में महिलाओं से जुड़ी योजनाओं को शामिल करवाना, ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित कर महिलाओं की आवाज को बुलंदी से रखे और महिलाओं से जुड़े विषयों को पुक्ता तरीके से ग्राम स्वराज समूह के माध्यम से रखे। बैठक में मिली सिख को गाँव की और अन्य गाँवों कि महिलाओं को साझा करे और उसे अपनाने हेतु प्रेरित करें। गाँव में शेष बची महिलाओं को सक्षम समूह के साथ जोड़ने हेतु नए सक्षम समूह का निर्माण किया जा रहा है कृपया शेष महिलाओं को नए बन रहे समूह से जुड़ने हेतु प्रेरित करें।

बाल स्वराज समूह : अक्टूबर माह में बाल स्वराज समूह की मासिक बैठक अंक आयोजन सभी 276 बाल स्वराज समूह की बैठक का आयोजन किया जायेगा इस माह बैठक में जिन बच्चो ने कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन से आपसी संवाद प्रक्रिया में भाग लिया है वह अपना अनुभव वंचित बच्चों को साझा करें। तथा बच्चे मर्जी से विषय का चयन कर संवाद करें साथ ही खेल खेल के माध्यम से बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु गतिविधि का आयोजन होगा।

अन्य गतिविधियाँ जैसे : सूर्य उर्जा, बायो गैस आदि के रखरखाव संचालन और प्रबन्धन के बारे में संवाद किया जायेगा। इसके साथ संस्था द्वारा हर वर्ष आयोजित होने वाली स्वराज सन्देश यात्रा के प्रारूप और यात्रा को लेकर संवाद का आयोजन होगा, पुरानी यात्राओं कि याद ताजा होगी और कुछ नए सुझाव मिलेंगे।

आप सभी के लिए यह माह बहुत महत्वपूर्ण है कृपया ध्यान से रहे, सुरक्षित रहे, आनंदमय रहे !!



अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें –
वागड रेडियो 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है – 9460051234 ई-मेल आईडी – radio@vaagdhara.org

यह
“वाते वाग्धारा नी”
 केवल
 आंतरिक
 प्रसारण है।

संकलन एवं सहयोग : **जागृती भट्ट**

